करियां कहिड़ो हालु, दरदवंदनि जे दिलि जो,
कुठा कुछनि कीनकी, लिंव लाए थिया लालु,
सदिके कयाऊं सिक तों, सामी तनु मनु मालु,
तनि खे कोहु करींदो कालु, जे मरण खों अगे मुआ.

परमेश्वर के विरह में तड़पने वाले प्रेमीजनों के मन की दशा का वर्णन करते हुए सामीजी कहते हैं कि मैं ऐसे दरदवंत/दुखी/पीड़ितजनों के मन का हाल कैसे बताऊँ ? प्रभु के प्रेम में मारे गये प्रेमी अपने मुख से एक अक्षर भी नहीं निकालते। वे मात्र प्रभु के प्रेम में मग्न हो कर लाल हो जाते हैं। परमात्मा के प्रेम को पाने के लिए उन्होंने अपना तन, मन और संपत्ति न्यौछावर कर दी है। ऐसे सच्चे प्रेमियों/भक्तों को भला काल (मृत्यु) भी क्या कर सकता है ? ऐसे प्रेमी तो मृत्यु के पहले ही सर्वस्व समर्पण कर देते हैं।

प्रेम ईश्वरीय देन है। प्रेम का अर्थ है समर्पण, अपने सर्वस्व का समर्पण । भक्ति का दूसरा नाम प्रेम है। भक्ति का अर्थ है ईश्वर से प्रेम । यह प्रेम मुक्ति का द्वार खोलने वाली चाबी/कुँजी है। यह प्रेम परम सुख प्रदान करने वाला होता है। अंतरात्मा के लिए व्याकुलता या तड़प का भाव निर्माण होना ईश्वर-प्रेम है। परमेश्वर के दर्शन के लिए, प्रभु से मिलने के लिए लालायित या उत्कंठित होना प्रेम का ही लक्षण है। जीवात्मा का परमात्मा से मिलने के लिए तड़पना स्वाभाविक ही है। किन्तु विविध व्यवधानों अथवा विकारों के कारण जीवात्मा परमात्मा से बिछड़ जाने के कारण दुखी है। विरहावस्था की भावनाओं का यथार्थ वर्णन अनेक संत-कवि एवं भक्त-कवि अपने काव्य में करते हुए दिखाई देते है। मीराबाई ने अपने पदों में इसी विरहावस्था का, व्यथा या दर्द का चित्रण किया है 'ए री, मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोई। सूफ़ी कवयित्री राबिया ने भी अपनी कविता में इसी प्रेम के दर्द का वर्णन किया है। प्रभु-प्रेम में पगला गये प्रेमियों का प्रेम भीतर ही भीतर प्रभु में निमग्न रहता है। उन्होंने अपना मन मार लिया होता है। मन से सभी प्रकार के विकार निकाल कर मन खाली कर लिया होता है। उनके अंत:करण में केवल प्रियतम परमेश्वर का ही निवास होता है। उनके जीवन में बस वह प्रेमी और प्रियतम का ही स्थान होता है। ऐसे अनन्य प्रेम में अन्य किसी को स्थान कहाँ ?

लाली मेरे लाल की, जित देखौं तित लाल।
लाली देखन में गई, मैं भी हो गई लाल ।।

■